ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

तुलसीदास के कृष्ण और सूरदास के राम

अवधेश कुमार
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

शोध सार

हिन्दी भक्तिकाव्य परम्परा में गोस्वामी तुलसीदास और महाकवि सूरदास का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। सामान्यतः तुलसीदास को राम-भक्ति और सूरदास को कृष्ण-भक्ति का प्रतिनिधि कवि माना जाता है, किन्तु उनके काव्य का सूक्ष्म अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि दोनों कवियों के यहाँ परस्पर आराध्य देवताओं का भी भक्तिपरक लोकजीवन का सार्थक और सुन्दर आध्यात्मिक चेतना से परिपूर्ण चित्रण उपलब्ध है। तुलसीदास के काव्य में कृष्ण का स्वरूप राम से अभिन्न, सौन्दर्य, करुणा और लीला का प्रतीक बनकर उपस्थित होते हैं और सूरदास के काव्य में राम मर्यादा, धर्म और आदर्श के प्रतीक रूप में प्रतिष्ठित हैं। प्रस्तुत शोध-लेख का उद्देश्य तुलसीदास के कृष्ण और सूरदास के राम के स्वरूप का भक्तिपरक अध्ययन और विश्लेषण करना है तथा यह भी स्पष्ट करना है कि सगुण भक्ति परम्परा में यह पारस्परिक सम्बन्ध भारतीय लोक जीवन के साथ भक्तिभाव में समन्वय और आध्यात्मिक चेतना की दृष्टि से जनमानस के लिए कितना जरुरी और उपयोगी है।

बीज शब्द : तुलसीदास, सूरदास, कृष्ण, राम, भक्ति, स्वरूप, सौन्दर्य, करुणा, लीला, काव्य परम्परा, सगुण भक्ति, लोकजीवन, लोककल्याण, समन्वय और आध्यात्मिक चेतना।

प्रस्तावना

भक्ति आन्दोलन मध्यकालीन भारतीय समाज की एक व्यापक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना का परिणाम था। इस आन्दोलन के अन्तर्गत सगुण भक्ति धारा में राम और कृष्ण दो प्रमुख आराध्य रूपों के रूप में स्थापित हुए। राम मर्यादा, आदर्श, धर्म और लोक-कल्याण के प्रतीक हैं, जबकि कृष्ण लीला, माधुर्य, प्रेम और सौन्दर्य के प्रतिनिधि माने जाते हैं। हिन्दी भक्ति साहित्य में तुलसीदास और सूरदास इन दोनों धाराओं के सर्वाधिक सशक्त कवि हैं। तुलसीदास के सन्दर्भ में आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं कि, "गोस्वामीजी का पक्ष है यदि मनुष्य के छोटे से अंतःकरण के भीतर ईश्वर दिखाई भी पड़े तो भी अखिल विश्व के बीच अपनी विभूतियों से भासित होनेवाला ईश्वर उससे कहीं पूर्ण और कल्याणकारी है।"[1] यद्यपि तुलसीदास का काव्य मुख्यत: रामकथा पर केंद्रित है, लेकिन कुछ ग्रन्थ लोकजीवन के साथ शिव-पार्वती, कृष्ण आदि की भक्ति से भी समादृत है। वहीं दूसरी ओर सूरदास का काव्य कृष्ण भक्ति और लीला पर आधारित है, लेकिन उसमें लोक जीवन के साथ राम के लोक स्वरूप एवं भक्ति चेतना के भी चित्रण विद्यमान हैं। सूरदास के सन्दर्भ में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का अभिमत है कि, "यदि हम

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

मनुष्यजीवन के संपूर्ण क्षेत्र को लेते हैं तो सूरदासजी की दृष्टि परिमित दिखाई पड़ती है। पर यदि उनके चुने हुए क्षेत्रों श्रृंगार और वात्सल्य को लेते हैं, तो उनके भीतर उनकी पहुँच का विस्तार बहुत अधिक पाते हैं। उन क्षेत्रों में इतना अंतर्दृष्टि विस्तार और किसी कवि का नहीं।... इन्होंने भक्तिमार्ग में भगवान का प्रेममय स्वरूप प्रतिष्ठित करके उसके आकर्षण द्वारा 'सायुज्य मुक्ति' का मार्ग दिखाया था।"[2] इस प्रकार तुलसीदास और सूरदास के काव्य में परस्पर आराध्य-स्वरूपों की उपस्थिति भक्ति परम्परा की उदार और समन्वय दृष्टि समान रूप से प्रकट करती है।

वस्तुत: भक्ति आन्दोलन का मूल उद्देश्य ईश्वर और भक्त के बीच प्रत्यक्ष, भावात्मक और प्रेममय सम्बन्ध की स्थापना था। सगुण भक्ति में ईश्वर साकार रूप में राम या कृष्ण के रूप में पूज्य बने। इस युग में रामानुजाचार्य, माध्वाचार्य और वल्लभाचार्य की वैष्णव परम्पराओं ने भक्तिकाव्य धारा को दार्शनिक आधार प्रदान किया। तुलसीदास, रामानन्द सम्प्रदाय से तथा सूरदास, वल्लभ सम्प्रदाय से प्रभावित थे। इसके बावजूद दोनों कवियों के यहाँ संकीर्ण सम्प्रदायिकता नहीं, बल्कि व्यापक वैष्णव दृष्टि मिलती है। यही कारण है कि तुलसीदास के यहाँ कृष्ण और सूरदास के यहाँ राम सहज रूप से स्वीकार्य हैं। अस्तु भक्तिकाव्य में इन दोनों कवियों के साहित्य में भगवान राम और कृष्ण का स्वरूप अत्यंत मधुर, करुणामय और लोकमंगलकारी है।

तुलसीदास के काव्य में कृष्ण

गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल की सगुण काव्यधारा में रामभक्ति काव्य परंपरा के प्रतिनिधि कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनकी प्रसिद्ध रचना 'रामचरितमानस' मुख्यतः भगवान राम की कथा पर आधारित है, परन्तु तुलसीदास की भक्ति-दृष्टि में अनेक आराध्य जैसे- हनुमान, शिव तथा कृष्ण आदि का भी उल्लेख मिलता है। तुलसीदास की कृति 'कृष्ण गीतावली' में कृष्ण की लीलाओं का अत्यंत मधुर और भक्तिपूर्ण वर्णन किया गया है लेकिन, 'रामचरितमानस' और 'विनय पत्रिका' में भी श्रीकृष्ण का वर्णन भी विद्यमान हैं। उन्होंने 'रामचरितमानस' के बालकाण्ड में कृष्ण और बलराम का उदाहरण देकर यह बताया है कि जिस प्रकार वे माता यशोदा को अत्यंत प्रिय हैं, उसी प्रकार भगवान का नाम भक्तों की जिह्वा और हृदय को प्रिय लगता है। 'मानस' का यह सन्दर्भ भगवान कृष्ण की मधुरता, भक्तों के हृदय में उनके निवास तथा उनके नाम की महिमा को व्यक्त करता है। यथा-

"स्वाद तोष सम सुगति सुधा के। कमठ सेष सम धर बसुधा के।।
जन मन मंजु कंज मधुकर से। जीह जसोमति हरि हलधर से।।"[3]

यहाँ गोस्वामीजी का कहना है कि भगवान का नाम मोक्षरूपी अमृत के समान मधुर और संतोष देने वाला है। यह संसार का आधार है और भक्तों के मन रूपी कमल में भौंरे की तरह निवास करता है। जैसे यशोदा को कृष्ण और बलराम अत्यंत प्रिय हैं, उसी प्रकार भक्तों की जिह्वा को भगवान का नाम अत्यंत प्रिय होता है।

यह सर्वविदित कि गोस्वामी तुलसीदास के लिए राम ही परब्रह्म हैं, किन्तु वे कृष्ण को राम से भिन्न नहीं मानते हैं। उनके अनुसार राम और कृष्ण एक ही ब्रह्म तत्त्व के दो सगुण रूप हैं। 'रामचरितमानस' के बालकाण्ड में ही तुलसीदास ने पुन: भगवान श्रीकृष्ण के अवतार की महिमा का संक्षिप्त वर्णन किया है। इसमें बताया गया है कि जब

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

पृथ्वी पर अधर्म और अत्याचार बढ़ जाता है, तब भगवान कृष्ण यदुवंश में अवतार लेकर संसार को पापों के भार से मुक्त करते हैं। साथ ही इसमें यह भी उल्लेख किया गया है कि भगवान की वाणी और उनकी लीला कभी असत्य नहीं होती, जो कुछ वे कहते हैं वह अवश्य सत्य होता है। यह प्रसंग भगवान कृष्ण की दिव्य शक्ति और उनके अवतार के उद्देश्य को स्पष्ट करती है। उदाहरण स्वरूप यह सन्दर्भ देखिए-

"अब तें रति तव नाथ कर होइहि नामु अनंगु।
बिनु बपु ब्यापिहि सबहि पुनि सुनु निज मिलन प्रसंगु।
जब जदुबंस कृष्न अवतारा। होइहि हरन महा महिभारा।।
कृष्न तनय होइहि पति तोरा। बचनु अन्यथा होइ न मोरा।।"[4]

इस प्रसंग में रति अपने पति कामदेव को बचाने के लिए करुण भाव से शिवजी के पास जाती है और अत्यन्त प्रेम के साथ विनती करके हाथ जोड़कर सामने खड़ी हो गयी। कृपालु शिवजी अबला, असहाय स्त्री को देखकर उसको सान्त्वना देते हुए कहते हैं कि हे रति! जब पृथ्वी के बड़े भारी भार को उतारने के लिये यदुवंश में श्रीकृष्ण अवतार होगा, तब तेरा पति उनके पुत्र के रूप में उत्पन्न होगा। मेरा यह वचन अन्यथा नहीं होगा। इस प्रकार तुलसीदास ने 'मानस' में श्रीकृष्ण के स्वरूप और उनके महात्म्य का वर्णन किया है।

'विनय पत्रिका' में तुलसीदास ने कृष्ण स्वरूप का स्मरण करते हुए लिखते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति से मनुष्य संसार के मोह, छल और माया से मुक्त हो जाता है। जिसके हृदय में भगवान कृष्ण का वास होता है, उसे संसार का कोई बंधन बाँध नहीं सकता। भगवान कृष्ण भक्तों को शक्ति, शांति और सच्चा मार्ग प्रदान करते हैं, इसलिए उनकी भक्ति ही जीवन का वास्तविक सहारा है। जैसे-

"मैं तोहिं अब जान्यो संसार।
बाँधि न सकहिं मोहि हरिके बल, प्रगट कपट-आगार।।
देखत ही कमनीय, कछू नाहिंन पुनि किये बिचार।
ज्यों कदलीतरु-मध्य निहारत, कबहुँ न निकसत सार।।
तेरे लिये जनम अनेक मैं फिरत न पायों पार।
महामोह-मृगजल-सरिता महँ बोरयो हौं बारहिं बार।।
सुनु खल! छल-बल कोटि किये बस होहिं न भगत उदार।
सहित सहाय तहाँ बसि अब, जेहि हृदय न नंदकुमार।।"[5]

यहाँ कवि तुलसीदास संसार से कहते हैं कि हे मायावी संसार! अब मैं तुम्हें अच्छी तरह समझ गया हूँ। तुम छल-कपट से भरे हुए हो, लेकिन अब मुझे भगवान का सहारा मिल गया है। इसलिए तुम मुझे अपने जाल में नहीं फँसा सकते। यह संसार बाहर से बहुत सुंदर दिखाई देता है, लेकिन जब इसके बारे में गहराई से सोचते हैं तो पता चलता है कि इसमें कोई असली सुख नहीं है। यह केले का पेड़ के समान है, जिसे जितना भी छीलो, उसमें से कोई ठोस चीज नहीं निकलती, केवल छिलका ही मिलता है। उसी प्रकार यह संसार भी अंदर से खाली है। मैंने तुम्हारे कारण

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

अनेक जन्मों तक भटकते हुए जीवन बिताया, लेकिन फिर भी इस संसार के दुखों से पार नहीं पा सका। यह संसार महामोह रूपी मृगजल की नदी के समान है, जिसमें मैं बार-बार डूबता रहा। वे कहते कि चाहे तुम करोड़ों प्रकार के छल और बल का प्रयोग करो, फिर भी सच्चे और उदार भक्त तुम्हारे वश में नहीं हो सकते। अंत में गोस्वामीजी कहते हैं कि अब मैं उस हृदय में निवास करूँगा जहाँ भगवान कृष्ण अर्थात् नंदकुमार बसते हैं, वहाँ संसार की माया और मोह का कोई प्रभाव नहीं होता। इसी प्रकार आगे वे लिखते हैं कि-

"कृष्ण, करुणाभवन, दवन कालीय खल, विपुल कंसादि निर्वंशकारी।
त्रिपुर-मद-भंगकर, मत्तगज-चर्मधर, अन्धकोरग-ग्रसन पन्नगारी।।"[6]

इस पद में तुलसीदास कहते हैं कि हे देव! आप कृष्ण हैं अर्थात् आप अपने रूप-माधुर्य से सबको आकर्षित करने वाले हैं, करुणा के स्थान हैं, कालिया नाग का नाश करने वाले हैं तथा कंस आदि बहुत से दुष्टों का संहार करने वाले हैं। हे देव, आप त्रिपुर दैत्य का घमंड तोड़ने वाले, मतवाले हाथी का चमडा धारण करने वाले तथा अंधकासुर रूप सर्प को निगलने के लिए गरुण हैं। निस्संदेह इस पद में गोस्वामी जी ने श्रीकृष्ण के लौकिक और अलौकिक शक्ति को रेखांकित किया है। वस्तुत: यहाँ कृष्णभक्ति राम कृपा से अभिन्न रूप में प्रस्तुत हुई है।

'कृष्ण गीतावली' की यदि बात करें तो इस ग्रन्थ में तुलसीदास ने कृष्ण को केन्द्र में ही रखकर उनके स्वरूप को चित्रित किया है। इसमें कृष्ण के बालरूप, उनकी चंचलता तथा वृंदावन की लीलाओं का काव्यात्मक चित्रण है। साथ ही कृष्ण के बाल्यकाल की अनेक लीलाओं जैसे- माखन चोरी, गोपियों के साथ उनकी चंचल क्रीड़ाएँ तथा यशोदा के साथ उनका वात्सल्यपूर्ण संबंध प्रमुखता के साथ दिखाई देता है। उदाहरण के रूप में एक पद में कृष्ण की बाल-लीला का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

"माता लै उछंग गोबिंदमुख बार बार निरखें। पुलकित तनु आनंदघन छन छन मन हरषै।।...
सुंदर मुख मोहिं देखाउ, इच्छा अति मोरे। मम समान पुन्यपुंज बालक नहिं तोरे।।
तुलसी प्रभु प्रेमबस्य मनुज-रूप धारी। बालकेलि लीलारस ब्रजजन हितकारी।।"[7]

हालाकि, तुलसीदास ने कृष्ण की लीलाओं को केवल मनोरंजन के लिए नहीं लिखा, बल्कि उसके माध्यम से भक्त और भगवान के मधुर संबंध को प्रकट किया है। गोपियों का कृष्ण के प्रति प्रेम और समर्पण भक्ति की सर्वोच्च अवस्था का प्रतीक माना गया है। 'कृष्ण गीतावली' में भक्तिभाव, प्रेम और आध्यात्मिक समर्पण की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

"हरि को ललित बदन निहारु।
निपटहि डाँटति निठुर ज्यों, लकुट कर तें डारु।।
मंजु अंजन सहित जल-कन चुवत लोचन चारु।
स्यामसारस मग मनो ससि स्रवत सुधा सिंगारु।।
सुभग उर दधिबुंद सुंदर लखि अपनपौ वारु।
मनहुँ मरकत-मृदु-सिखर पर लसत बिसद तुषारु।।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

कान्हहू पर सतर भौंहैं, महरि मनहिं बिचारु।
दास तुलसी रहित क्यों रिस निरखि नंदकुमार॥"[8]

इस पद में कवि तुलसीदास ने बालक कृष्ण की वात्सल्य-लीला का सुंदर चित्रण किया है। माता यशोदा उन्हें डाँट रही हैं और हाथ में लकड़ी लेकर डराती हैं, जिससे कृष्ण की आँखों से आँसू झरने लगते हैं और काजल फैल जाता है। उनके वक्ष पर लगे दही की बूँदें ऐसे प्रतीत होती हैं जैसे हरे मरकत पर्वत पर ओस की बूँदें चमक रही हों। कृष्ण के मनोहर रूप को देखकर माता यशोदा का क्रोध भी शांत हो जाता है। कवि कहते हैं कि नंदकुमार के ऐसे सुंदर रूप को देखकर कोई भी व्यक्ति क्रोधित नहीं रह सकता।

'कृष्ण गीतावली' में भगवान कृष्ण की अद्भुत शक्ति और करुणा का अनेक स्थानों पर वर्णन किया है, जिसमें वे ब्रजवासियों पर आए संकट को दूर करने के लिए गोवर्धन पर्वत उठा लेते हैं। उनकी इस दिव्य लीला से ब्रजवासी सुरक्षित हो जाते हैं और देवराज इन्द्र का अहंकार भी नष्ट हो जाता है। इससे भगवान कृष्ण के रक्षक, दयालु और सर्वशक्तिमान स्वरूप की महिमा प्रकट होती है। जैसे-

"गरजत घोर बारिधर धावत प्रेरित प्रवल समीर॥
बार बार पविपात, उपक्ष घन बरषत बूँद बिसाल।
सीत-समीत पुकारत आरत गो गोसुत गोपी ग्वाल॥
राखहु राम कान्ह यहि अवसर दुसह दसा भइ आइ।
नंद बिरोध कियो सुरपत्ति सों सो तुम्हरो बल पाइ॥
सुनि हँसि उठ्यौ नंद को नाहरु, लियो कर कुधर उठाइ।
तुलसिदास मघवा अपने सों करि गयो गर्व गँवाइ॥"[9]

यहाँ तुलसीदास कहते हैं कि जो भक्त कृष्ण के दास हैं, वे सदैव उनके निकट रहते हैं। जो लोग भगवान को छोड़कर अन्य साधनों का सहारा लेते हैं, वे ऐसे हैं जैसे डूबता हुआ व्यक्ति सहारे के लिए झाग को पकड़ने का प्रयास करता है। कृष्ण का अत्यंत सुंदर और मनोहर मुख वे किसी भी प्रकार नहीं भूल सकते। उनके लिए योग, साधना और मोक्ष जैसे सभी साधन भी कृष्ण की मधुर मुरली के सामने तुच्छ हैं। अंत में तुलसीदास कहते हैं कि जिस हृदय में श्यामसुंदर का निवास होता है, वहाँ निर्गुण भाव नहीं रह सकता। इसलिए वे कहते हैं कि जिसे अन्य साधन अच्छे लगते हों, वह वही करे; परंतु वे तो केवल कृष्ण-भक्ति में ही लगे रहेंगे। उदाहरण स्वरूप यह पद देखिए-

"परम चतुर निज दास स्याम के संतत निकट रहत हौ।
जल बूड़त अवलंब फेन को फिरि फिरि कहा कहत हौ॥
वह अति ललित मनोहर आनन कौने जतन बिसारौं।
जोग जुगुति अरु मुकुति बिबिध बिधि वा मुरली पर वारौं॥
जेहि उर बसत स्यामसुंदर घन तेहि निगुन कस आवै।
तुलसिदास सो भजन बहाओ जाहि दूसरो भावै॥"[10]

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

इस पद में कवि ने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति और प्रेम को व्यक्त करते हुए यह बताया है कि सच्चे भक्त के लिए भगवान की भक्ति ही सबसे श्रेष्ठ मार्ग है।

अतः कहा जा सकता है कि तुलसीदास के काव्य में कृष्ण के स्वरूप का व्यापक वर्णन समाहित है। इन रचनाओं में कृष्ण का स्वरूप न केवल कृष्ण भक्ति की मधुरता को व्यक्त करती है, बल्कि भक्ति साहित्य की उस समन्वयवादी लोक परंपरा को भी दर्शाती है जिसमें ईश्वर के विभिन्न रूपों को एक ही परम सत्य की अभिव्यक्ति माना गया है। आचार्य श्यामसुन्दर दास का मत है कि, "तुलसीदासजी के काव्यों में वाणी की शक्ति का संपूर्ण चमत्कार प्रकट हुआ है। इसी अद्भुत और असाधारण प्रतिभा के कारण उन्होंने देश और काल की क्षुद्र सीमाओं का अतिक्रमण किया है, जिससे विश्व भर के विद्वान् उनको अपनी अपनी श्रद्धा-पुष्पांजलि चढ़ाने के लिये प्रतिस्पर्द्धा दिखला रहे हैं।"[11]

सूरदास के काव्य में राम

कृष्णभक्त कवि सूरदास वात्सल्य रस के सम्राट हैं। वे मुख्यतः कृष्ण के बाल-लीला और वात्सल्य भाव के कवि ही नहीं हैं, बल्कि उन्होंने राम की बाल लीलाओं का वर्णन भी गहरी तन्मयता के साथ किया है। उनकी कृति 'सूरसागर' के नवम स्कन्ध में रामकथा का वर्णन भावपूर्ण शैली में समाहित हैं। 'सूरसागर' के नवम स्कन्ध के आरम्भ में ही सूरदास ने भगवान राम के अवतार के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि-

"आजु दसरथ कै आँगन भीर।
ये भू-भार उतारन कारन प्रगटे स्याम-सरीर।
फूले फिरत अजोध्या-बासी, गनत न त्यागत चीर।
परिरंभन हँसि देत परस्पर, आनंद-नैननि नीर।
त्रिदस-नृपति, रिपिव्यौम-विमाननि-देखत रह्यौ न धीर ।
त्रिभुवन-नाथ दयाल दरस दै, हरी सबनि की पीर ।
देत दान राख्यौ न भूप कछु, महा बड़े नग हीर।
भए निहाल सूर सब जाचक, जे जाँचे रघुवीर।।"[12]

यहाँ कवि सूरदास कहते हैं कि आज राजा दशरथ के आँगन में बहुत भीड़ लगी है, क्योंकि पृथ्वी पर राक्षसों का अत्याचार बढ़ गया है और इसे दूर करने के लिए भगवान राम ने अवतार लिया है। अयोध्या के निवासी अत्यंत प्रसन्न होकर घूम रहे हैं। वे एक-दूसरे को गले लगा रहे हैं और आनंद के आँसू उनकी आँखों से बह रहे हैं। सभी देवता आकाश में अपने विमानों से यह अद्भुत दृश्य देख रहे हैं और वे भी धैर्य नहीं रख पा रहे हैं। तीनों लोकों के स्वामी दयालु भगवान ने दर्शन देकर सबकी पीड़ा दूर कर दी है। राजा दशरथ भी इतने प्रसन्न हैं कि वे अपने राज्य में गरीबों को बड़े-बड़े नाग और रत्न भी दान कर रहे हैं। अंत में सूरदास कहते हैं कि जो भी याचक भगवान राम से कुछ माँगता है, वे सभी संतुष्ट हो जाते हैं।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

'सूरसागर' के नवम स्कन्ध में ही सूरदास ने भगवान राम के बाल रूप और उनकी दिव्य लीला का अत्यंत सुंदर वर्णन किया है, जिसमें बालक राम की मनोहर छवि तथा उनके जन्म से अयोध्या में फैले आनंद का चित्रण किया गया है। यथा-

"करतल-सोभित वान धनुहियाँ।
खेलत फिरत कनकमय आँगन, पहिरे लाल पनहियाँ।
दसरथ-कोसिल्या के आगे, लसत सुमन की छहियाँ।
मानो चारि हंस सरवस तें बैठे आइ सदेहियाँ।
रघुकुल-कुमुद चंद चिंतामनि, प्रगटे भूतल महियाँ।
आए ओप देन रघुकुल कौ, आनंद-निधि सब कहियाँ।
यह सुख तीनि लोक मैं नाहीं, जो पाए प्रभु पहियाँ।
सूरदास हरि बोलि भक्ति कौं, निरवाहत गहि बहियाँ।।"[13]

यहाँ बाल स्वरूप राम अपने हाथ में धनुष-बाण लेकर स्वर्णमय आँगन में खेल रहे हैं और उनके चरणों में लाल जूतियाँ शोभा दे रही हैं। वे दशरथ और कौशल्या के सामने अत्यंत सुंदर लगते हैं। राम रघुकुल रूपी कमल के चंद्रमा के समान हैं, जिनके प्रकट होने से रघुवंश में आनंद फैल गया। कवि सूरदास कहते हैं कि भगवान राम के चरणों की प्राप्ति से बढ़कर तीनों लोकों में कोई सुख नहीं है। वास्तव में सूरदास भगवान राम को मर्यादा और धर्म के प्रतीक रूप में स्वीकार करते हैं और उन्हें सामाजिक और नैतिक आदर्श के रूप में भी प्रतिष्ठित करते हैं। इनके यहाँ भगवान राम की लीलाओं और पराक्रम में लोककल्याण का सुंदर उपक्रम भी है। जहाँ ऋषि विश्वामित्र द्वारा राम और लक्ष्मण को साथ ले जाते हैं और बाद में ताड़का वध तथा सीता-स्वयंवर की घटना का भी वर्णन है। जैसे-

"दसरथ सौ रिषि आनि कह्यौ।
असुरनि सौ जग होन न पावत, राम-लखन तब संग दयो।
मारि ताड़का, यज्ञ करायौ, विस्वामित्र अनंद भयौ।
सीय-स्वयंवर जानि सूर-प्रभु को कौ ले रिषि ता ठौर गयौ।।"[14]

कवि कहते हैं कि ऋषि विश्वामित्र राजा दशरथ के पास आए और उन्होंने कहा कि राक्षसों के कारण यज्ञ और धार्मिक कार्य ठीक से नहीं हो पा रहे हैं, इसलिए राम और लक्ष्मण को उनके साथ भेज दिया जाए। राजा दशरथ ने उनकी बात मानकर दोनों भाइयों को उनके साथ भेज दिया। राम ने मार्ग में ही राक्षसी ताड़का का वध किया और ऋषि विश्वामित्र के यज्ञ की सफलतापूर्वक रक्षा की। इसके बाद ऋषि विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण को लेकर जनकपुरी गए, जहाँ सीता के स्वयंवर का आयोजन होने वाला था। इस पद में राम के पराक्रम, धर्मरक्षा और लोकजीवन का सुन्दर वर्णन है।

इसी प्रकार अहल्या और शबरी-उद्धार का भी प्रसंग इस कृति में समाहित है, जिसमें सूरदास नें राम की कृपा और भक्त की सच्ची भक्ति और निष्ठा को उद्धृत किया है। उन्होंने अहल्या और शबरी दोनों का उद्धार किया।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

यहाँ पर भगवान राम की करुणा और पतित-उद्धारक स्वरूप का अत्यंत भावपूर्ण वर्णन किया है। प्रस्तुत पद में राम द्वारा अहल्या के उद्धार की घटना का चित्रण किया गया है। जैसे-

"गंगा-तट आए श्रीराम।
तहाँ पपान रूप पग परसे, गौतम रिषि की बाम।
गई अकास देव तन धरिकै, अति सुंदर अभिराम।
सूरदास प्रभु पतित-उधारन-विरद, कितौ यह काम।।"[15]

इस पद में भगवान राम की करुणा और उनके पतित-उद्धारक स्वरूप का वर्णन किया गया है।

शबरी-उद्धार के प्रसंग में सूरदास लिखते हैं कि जब राम शबरी के आश्रम पहुँचे, तो शबरी ने प्रेम से उन्हें आसन देकर मीठे बेर खिलाए। राम ने उसकी सच्ची भक्ति को समझकर जूठे बेर भी प्रसन्न होकर खाए, क्योंकि वे जाति नहीं बल्कि भक्ति-भाव को महत्व देते हैं। अंत में शबरी प्रभु को प्रणाम करके धन्य हो जाती है और भगवान के धाम को प्राप्त करती है। उदाहरण स्वरूप यह पद देखिए-

"सबरी आश्रम रघुवर आए। अरधासन दै प्रभु बैठाए।
खाटे फल तजि मीठे ल्याई। जूँठे भए सो प्रभु सहज सुहाई।
अंतरजामी अति हित मानि। भोजन कीने, स्वाद बखानि।
जाति न काहू की प्रभु जानत। भक्ति-भाव हरि जुग जुग मानत।
करि दंडवत भई बलिहारी। पुनि तन तजि हरि-लोक सिधारी।
सूरज प्रभु अति करुना भई। निज कर करि तिल-अंजलि दई।।"[16]

यहाँ भक्त कवि सूरदास द्वारा भगवान राम की भक्तवत्सलता और शबरी की निष्कपट भक्ति का मार्मिक चित्रण किया गया है।

'सूरसागर' के नवम स्कन्ध में सूरदास ने भगवान राम के पराक्रम और उनकी दृढ़ प्रतिज्ञा का अत्यंत प्रभावशाली वर्णन किया है। प्रस्तुत पद में राम द्वारा रावण-वध और सीता की रक्षा करने की प्रतिज्ञा का वर्णन किया गया है। जहाँ पर वे कहते हैं कि-

"तब हौ नगर अजोध्या जैहों।
एक बात सुनि निश्चय मेरी, राज्य विभीषन दैहों।
कपि-दल जारि और सब सेना, सागर सेतु बँधैहों।
काटि दसौ सिर, बीस भुजा तत्र दसरथ-सुत जु कहैहों।
छिन इक माहिं लंक गढ़ तोरों, कंचन-कोट ढहैहौं।
सूरदास प्रभु कहत विभीषन, रिपु हति सीता लेहों।।"[17]

यहाँ भाव यह है कि प्रभु श्रीराम ने विभीषण से कहते हैं कि जब तक वे लंका जाकर रावण का वध नहीं कर लेते, तब तक अयोध्या नहीं लौटेंगे। वे अपनी प्रतिज्ञा प्रकट करते हुए कहते हैं कि हमारी वानरसेना समुद्र पर

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

सेतु बनाकर लंका पहुँचेगी और वानरसेना लंका को जला देगी। इसके बाद हम विभीषण को लंका का राज्य देंगे। राम कहते हैं कि वे रावण के दसों सिर और बीस भुजाएँ काटकर उसका वध करेंगे और लंका के स्वर्णमय किले को नष्ट कर देंगे। अंत में कवि कहते हैं कि राम शत्रु का संहार करके सीता को वापस ले आएँगे। निश्चित रूप से इस पद में राम की वीरता, दृढ़ संकल्प और धर्म की रक्षा करने की प्रतिज्ञा का वर्णन किया गया है।

सूरदास ने भगवान राम की वीरता और दिव्य तेज का अत्यंत प्रभावशाली वर्णन किया है। राम के तेज और उनके प्रभाव से देवताओं तथा असुरों की स्थिति का चित्रण करते हुए वे लिखते हैं कि-

"जमहु कुबेर इंद्र है जानत, रचि रचि के रथ साजत?
रघुपति-रवि-प्रकास सो देखौं, उडुगन ज्यों तोहिं भाजत।
ज्यौं सहगमन सुंदरी के संग बहु बाजन हैं बाजत।
तैसे सूर असुर आदिक सब, संग तेरे हैं गाजत।।"[18]

अर्थात् यमराज, कुबेर और इन्द्र जैसे देवता भी युद्ध के लिए अपने-अपने रथ सजाकर तैयार हैं। कवि ने राम के तेज की तुलना सूर्य से करते हुए कहते हैं कि उनके प्रकाश को देखकर शत्रु ऐसे भागते हैं जैसे सूर्य के उदय होते ही तारे आकाश से लुप्त हो जाते हैं। सूरदास कहते हैं कि जैसे किसी सुंदर स्त्री के साथ सती होने के समय अनेक प्रकार के बाजे बजते हैं, वैसे ही राम के साथ भी देवता, असुर और अनेक योद्धा युद्ध में उपस्थित होकर शोर कर रहे हैं। इस पद में भगवान राम के अद्भुत तेज, वीरता और उनके प्रभाव से शत्रुओं के भयभीत होने का चित्रण किया गया है।

सूरदास ने तीनों लोकों के स्वामी राम की महिमा और उनकी अपार शक्ति का भी अत्यंत प्रभावशाली वर्णन किया है। प्रस्तुत पद में राम की महानता बताते हुए मंदोदरी अपने पति रावण को समझाती है। जैसे-

"मूरख, रघुपति-सत्रु कहावत?
जाके नाम, ध्यान, सुमिरन तें, काटि जज्ञ-फल पावत!
नारदादि सनकादि महामुनि, सुमिरत मन-बच ध्यावत।
असुर तिलक प्रहलाद, भक्त बलि, निगम नेति जस गावत।
जाकी घरनि हरी छल-बल करि, लायो बिलंब न आवत।
दस अरु आठ पदुम बनचर ले, लीला सिंधु बँधावत!
जाइ मिलो कौसल-नरेस को, मन अभिलाष बढ़ावत।
दै सीता अवधेस पाइँ परि, रहु लंकेस कहावत।
तू भूल्यौ दससीस बीस भुज, मोहि गुमान दिखावत।
कंध उपारि डारिहों भूतल, सूर सकल सुख पावत।।"[19]

इस पद में मंदोदरी अपने पति रावण को समझते हुए कहती है कि हे मूर्ख! तू राम को अपना शत्रु क्यों मानता है? उनके नाम का ध्यान और स्मरण करने से ही मनुष्य को यज्ञों के समान महान फल प्राप्त हो जाता है। नारद, सनक आदि महान ऋषि भी मन, वचन और कर्म से उनका निरंतर स्मरण करते हैं। प्रह्लाद और राजा बलि जैसे महान भक्त

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

भी उनकी महिमा का गुणगान करते हैं। पुन: कहती है कि वही भगवान विष्णु हैं, जिन्होंने वामन रूप धारण करके राजा बलि के घर से तीन पग में पृथ्वी और स्वर्ग को जीत लिया था। वही राम अब वानर-सेना के साथ समुद्र पर सेतु बाँधकर अपनी लीला दिखा रहे हैं। इसलिए वह रावण को समझाती है कि वह अयोध्या के राजा राम से जाकर मिल जाए और क्षमा याचना कर ले और सीता को लौटा दे। यदि वह अहंकार करेगा, तो राम उसे पराजित करके उसके कुल का नाश कर देंगे। निश्चित रूप से इस पद में भगवान राम की महिमा, उनकी शक्ति और रावण के अहंकार को त्यागकर राम की शरण लेने का संदेश दिया गया है।

आगे वे लिखते हैं कि, "श्रीरघुनाथ-चरन-व्रत उर धरि, क्यों नहिं लागत पाइ? सबके ईस, परम करुनामय, सबही कौं सुखदाइ। हौं जु कहत, लै चलौ जानकी, छाँड़ो सबै ढिठान। सनमुख होइ सूर के स्वामी, भक्तनि कृपा-निधान।।"[20] अर्थात् मंदोदरी कहती है कि भगवान राम के चरणों की शरण में जाने से तुम्हे सब कुछ प्राप्त हो सकता है, क्योंकि वे सबके स्वामी और अत्यंत करुणामय हैं तथा सभी को सुख देने वाले हैं। इसलिए सीता को साथ लेकर राम के पास चलो और अपना हठ छोड़ दो। अंत में कहा गया है कि यदि तुम राम के सामने जाकर उनकी शरण में आ जाओगे, तो वे भक्तों पर कृपा करने वाले प्रभु तुम्हें भी क्षमा कर देंगे। इस प्रकार यहाँ भगवान राम की करुणा, शक्ति और उनकी शरणागति की महिमा का सुंदर वर्णन किया है।

विश्लेषणात्मक अध्ययन

यद्यपि तुलसीदास और सूरदास दोनों सगुण भक्ति परम्परा के कवि हैं, परन्तु उनकी दार्शनिक दृष्टि में सूक्ष्म भेद दृष्टिगोचर होता है। तुलसीदास के यहाँ राम निर्गुण ब्रह्म के सगुण साकार हैं और कृष्ण उसी ब्रह्म तत्व की लीलामयी अभिव्यक्ति हैं। इसीलिए वे राम और कृष्ण को अभिन्न मानते हैं। यह दृष्टि भक्ति में अद्वैत और समन्वय को प्रतिष्ठित करती है। तुलसीदास के काव्य में भक्ति का प्रधान रस शान्त और करुण है। उनके कृष्ण-चित्रण में भी माधुर्य होते हुए मर्यादा का अतिक्रमण नहीं होता। जबकि सूरदास के यहाँ वात्सल्य और माधुर्य रस की प्रधानता है। उनके राम-चित्रण में गंभीरता और आदर्शबोध दिखाई देता है, जो कृष्ण की चंचलता के विपरीत संतुलन स्थापित करता है। सूरदास के यहाँ दार्शनिक गहनता भावात्मक स्तर पर व्यक्त होती है। कृष्ण उनके काव्य में ईश्वर के साकार, सुलभ और मानवीय रूप हैं, जबकि राम आदर्श, धर्म और मर्यादा के प्रतीक हैं। इस प्रकार तुलसीदास और सूरदास दोनों के काव्य में समन्वय की प्रवृत्ति स्पष्ट है। तुलसीदास के यहाँ कृष्ण, राम-भक्ति की पुष्टि करते हैं और सूरदास के यहाँ राम, कृष्ण-भक्ति को नैतिक आधार प्रदान करते हैं। दोनों भक्त कवि यह सिद्ध करते हैं कि भक्ति का मूल उद्देश्य ईश्वर-प्रेम है, न कि किसी एक रूप की संकीर्ण उपासना।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भक्तिकाल में जब धार्मिक विविधता और सामाजिक तनाव की स्थिति थी, तब भक्ति काव्य ने समाज को समन्वय, सहिष्णुता और आध्यात्मिक एकता का संदेश दिया। तुलसीदास और सूरदास जैसे महान कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से ईश्वर के व्यापक और समन्वयवादी स्वरूप को प्रस्तुत किया।

तुलसीदास ने जहाँ अपने काव्य में रामभक्ति के साथ कृष्ण की महिमा का वर्णन किया, वहीं सूरदास भी कृष्णभक्ति के साथ राम की लीलाओं का बखूबी चित्रण किया है। इस प्रकार दोनों कवियों के काव्य में भक्ति की समन्वयवादी दृष्टि दिखाई देती है। उनके काव्य में लोक प्रेम, करुणा, समानता और मानवता के आदर्शों का सुंदर प्रतिपादन है। इसलिए कहा जा सकता है कि तुलसीदास और सूरदास का भक्ति काव्य भारतीय लोकजीवन में ईश्वरीय भक्ति के साथ मानवता, नैतिकता, सहिष्णुता और समन्वय का सशक्त उदाहरण है। आज के बहुलतावादी समाज में भी उनकी यह उदार और व्यापक ईश्वर-दृष्टि अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणादायक है।

संदर्भ सूची-

1. गोस्वामी तुलसीदास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सोलहवाँ संस्करण, संवत् 2063, पृ. 05
2. सूरदास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, बारहवाँ संस्करण, संवत् 2059 , पृ. 93
3. श्रीरामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड, संस्करण- संवत् 2071, दोहा-19, चौपाई 7-8, पृ. 42
4. श्रीरामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड, संस्करण- संवत् 2071, दोहा-87, चौपाई 1-2, पृ. 103
5. विनय पत्रिका, गोस्वामी तुलसीदास, प्रकाशक- ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी-01, द्वितीय संस्करण, संवत् 2019, पद- 188, पृ. 316
6. विनय पत्रिका, गोस्वामी तुलसीदास, प्रकाशक- ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी-01, द्वितीय संस्करण, संवत् 2019, हरिशंकरी पद- 49, पृ. 89
7. तुलसी ग्रंथावली, खण्ड-2, श्रीकृष्णगीतावली, गोस्वामी तुलसीदास, प्रकाशक- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पद- 1, पृ. 361
8. तुलसी ग्रंथावली, खण्ड-2, श्रीकृष्णगीतावली, गोस्वामी तुलसीदास, प्रकाशक- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पद- 14, पृ. 364
9. तुलसी ग्रंथावली, खण्ड-2, श्रीकृष्णगीतावली, गोस्वामी तुलसीदास, प्रकाशक- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पद- 18, पृ. 366
10. तुलसी ग्रंथावली, खण्ड-2, श्रीकृष्णगीतावली, गोस्वामी तुलसीदास, प्रकाशक- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पद- 33, पृ. 370
11. गोस्वामी तुलसीदास, श्यामसुन्दर दास, हिन्दुस्तानी एकेडमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण- 2011, पृ. 08
12. सूरसागर (प्रथम खण्ड), सूरदास, संपादक- श्रीनंददुलारे वाजपेयी, प्रकाशक- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, तृतीय संस्करण, संवत् 2015 वि., नवम स्कंध, पद- 16, पृ. 191-192

13. सूरसागर (प्रथम खण्ड), सूरदास, संपादक- श्रीनंददुलारे वाजपेयी, प्रकाशक- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, तृतीय संस्करण, संवत् 2015 वि., नवम स्कंध, पद- 19, पृ. 192-193
14. सूरसागर (प्रथम खण्ड), सूरदास, संपादक- श्रीनंददुलारे वाजपेयी, प्रकाशक- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, तृतीय संस्करण, संवत् 2015 वि., नवम स्कंध, पद- 21, पृ. 193
15. सूरसागर (प्रथम खण्ड), सूरदास, संपादक- श्रीनंददुलारे वाजपेयी, प्रकाशक- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, तृतीय संस्करण, संवत् 2015 वि., नवम स्कंध, पद- 22, पृ. 193
16. सूरसागर (प्रथम खण्ड), सूरदास, संपादक- श्रीनंददुलारे वाजपेयी, प्रकाशक- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, तृतीय संस्करण, संवत् 2015 वि., नवम स्कंध, पद- 67, पृ. 208
17. सूरसागर (प्रथम खण्ड), सूरदास, संपादक- श्रीनंददुलारे वाजपेयी, प्रकाशक- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, तृतीय संस्करण, संवत् 2015 वि., नवम स्कंध, पद- 113, पृ. 229
18. सूरसागर (प्रथम खण्ड), सूरदास, संपादक- श्रीनंददुलारे वाजपेयी, प्रकाशक- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, तृतीय संस्करण, संवत् 2015 वि., नवम स्कंध, पद- 130, पृ. 236
19. सूरसागर (प्रथम खण्ड), सूरदास, संपादक- श्रीनंददुलारे वाजपेयी, प्रकाशक- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, तृतीय संस्करण, संवत् 2015 वि., नवम स्कंध, पद- 133, पृ. 237
20. सूरसागर (प्रथम खण्ड), सूरदास, संपादक- श्रीनंददुलारे वाजपेयी, प्रकाशक- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, तृतीय संस्करण, संवत् 2015 वि., नवम स्कंध, पद- 133, पृ. 238